बाबा मुक्तानन्द के दर्शन एवं उनका प्रज्ञान

१. आपका सम्मान करो,
आपको पूजो,
आपको ध्याओ,
आपका राम, आपमें आप होकर रहता है।

२. सद्गुरुनाथ महाराज की जय! बड़े प्रेम व सम्मान से सबका हार्दिक स्वागत। सम्मान के साथ दूसरे व्यक्ति का स्वागत करना, सच्ची मानवता है। यही ज्ञान है। जब मनुष्य अपने अन्तर में परमात्मा के दर्शन करता है तो वह दूसरों में भी परमात्मा को देखने लगता है।

३. गुरु, मन्त्रस्वरूप सतत तुम्हारे हृदय में रहते हैं। उन्हें वहीं देखो — उनके साथ सम्पर्क बनाए रखने का वही सबसे अच्छा तरीक़ा है।

४. मेरे गुरुदेव कहा करते थे, "भगवान एक हैं और वे प्रेमस्वरूप हैं।" इसलिए, तुम्हें सीखना चाहिए कि अपने पूरे हृदय से दूसरों का स्वागत कैसे किया जाए। यही सर्वोच्च धर्म है।

५. जब तुम्हारे अन्दर 'उसे' पाने की तीव्र ललक होती है, जब तुम्हारे अन्दर उस परम सत्य को पाने की प्यास होती है, तब तुम्हारे अपने हृदय में यह सत्य स्वयं को प्रकट करता है। ऐसा कौन-सा स्थान है जहाँ आत्मा नहीं है? ऐसा कौन है जिसमें यह आत्मा नहीं है?

६. जैसे-जैसे मन्त्र तुम्हारे अन्दर अधिकाधिक स्पन्दित होता है, मन्त्र का लक्ष्य—जो शुद्ध प्रेम है—हृदय में प्रवाहित होने लगता है।

७. हम परमात्मा को पाने के लिए ध्यान नहीं करते वरन् उस परमात्मा के दर्शन के लिए ध्यान करते हैं जो पहले से ही प्राप्त है।

८. साधना के लिए तुम्हें आवश्यकता है तो बस दृढ़ प्रयत्न की। और यदि तुम वह दृढ़ प्रयत्न कर सकते हो तो तुम चाहे कहीं भी हो, तुम्हारी साधना भली प्रकार होगी। उसके लिए तुम्हें किसी

आश्रम में रहने की आवश्यकता नहीं है। साधना के लिए तुममें आत्मसाक्षात्कार की प्रचण्ड तड़प होनी चाहिए और यदि तुममें वह है तो तुम कहीं भी साधना कर सकते हो।

९. हमारा अस्तित्व चिति में है और हम वापस इसी में लय हो जाते हैं। हम वह चिति हैं। इसी को साधना कहते हैं।

१०. नामसंकीर्तन एक बहुत महान साधना है। यह रक्त को प्रभावित करता है और रक्त के माध्यम से शरीर की अन्य सभी धातुओं को प्रभावित करता है। महान सिद्धजन, आत्मसाक्षात्कार के बाद भी, आनन्दपूर्ण नामसंकीर्तन में रत रहते हैं। यदि तुम प्रेम से नामसंकीर्तन करो तो वह 'नाम' ही तुम्हें उसके अर्थ तक ले जाता है।

११. वह शक्ति जो तुम्हारे अन्दर जाग्रत हो, क्रियाशील हो जाती है, वही सच्ची गुरु है। ऐसा मत सोचो कि गुरु, शक्ति और मन्त्र एक-दूसरे से भिन्न हैं। वे एक ही हैं। दृढ़ता, स्थितप्रज्ञा और प्रेम के साथ ध्यान करो, यह महसूस करते हुए कि गुरु तुम्हारे अन्तर में वास करते हैं।

१२. इस योग में नामसंकीर्तन की महानतम भूमिका है; यह एक चुम्बक है जो परमात्मा की शक्ति को खींचता है। नामसंकीर्तन, ध्यान को आसान बनाता है। अन्तरस्थ कुण्डलिनी शक्ति, नामसंकीर्तन से बहुत प्रसन्न हो जाती है। यह जानने के लिए कि यह कितना प्रभावशाली है, तुम्हें नामसंकीर्तन करना चाहिए।

१३. आज प्रेम का दिन है, इसलिए मैं तुम सबका बड़े प्रेम से स्वागत करता हूँ, क्योंकि सबसे प्रेम करना, मेरी पूजा है। मेरे पास पूजा का और कोई साधन नहीं है। मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।

१४. यदि तुममें गुरु के प्रति पूर्ण भक्ति, आदर और प्रेम है, तो इसमें तनिक भी संशय नहीं है कि तुम्हें वह सब मिलेगा जो गुरु के पास देने के लिए है।

१५. जिसने अपने में जगत को
और जगत में अपने को देखा
और चराचर जगत में उस 'एक' को देखा;
मुक्तानन्द! वही एक सिद्ध है।

१६. गुरु करुणापूर्ण हैं, यदि तुम उनमें अपने को लय कर दो, तो तुम भी करुणा से भर उठोगे। प्रेम से, अपनेपन के भाव से, अपने आपको उनमें डूब जाने दो।

१७. तुम ही वह हो जिसे तुम ध्यान में देखते और अनुभव करते हो और जिसे यह बोध होता है कि ध्यान में तुम्हारे साथ क्या हो रहा है। जो सतत विद्यमान है, उसे ढूँढ़ने का प्रश्न ही कहाँ उठता है?

१८. अन्तर-जगत महान है, वह विशाल है, वह दिव्य है—और ध्यान द्वारा उस जगत को जाना जाता है।

१९. अभिनवगुप्त के 'तन्त्रालोक' में स्पष्ट किया गया है कि सब कुछ शिव है। इस कारण, इस बोध के अभ्यास द्वारा समदृष्टि का उदय होना बड़ा स्वाभाविक है। वस्तुतः जब सब कुछ शिव है, तो हर चीज़ को शिव के रूप में देखना क्या इतना कठिन है? हमें अपने रीतिगत दृष्टिकोण को बदलना चाहिए। तब हम सुखी हो जाएँगे।

२०. वेदान्त में एक प्रश्न है : "मनुष्य को वेदान्त की क्या आवश्यकता है? मनुष्य कैसे वेदान्त को प्रयोग में लाता है?" जो उत्तर दिया गया है, वह यह है : "मैं वेदान्त का अध्ययन करता हूँ जिससे कि मैं अपने सभी दुःखों और कष्टों से छुटकारा पा सकूँ और अपने अन्तर में सहज परमानन्द को पा सकूँ।" हम ज्ञानार्जन करते हैं जिससे कि हम अपने आपमें तृप्त हो सकें, जिससे कि हम मुक्त हो सकें और शान्ति का अनुभव कर सकें।

२१. मैं इस संसार को सन्तों से भरा हुआ देखना चाहता हूँ। मैं सबको सुखी देखना चाहता हूँ। हर कोई सतत आनन्द में रहे और उसे स्वप्न में भी दुःख न हो। परमात्मा से यही मेरी अन्तिम इच्छा है।

२२. जिस क्षण तुम्हें अपने अन्तर में परमात्मा का बोध होता है, तुम इस पूरे संसार को स्वर्ग-समान देखने लगते हो।

२३. गुरुकृपा को शक्तिपात के रूप में भी जाना जाता है जिसे केवल सिद्धगुरु ही सम्प्रेषित कर सकते हैं। उनमें भक्त को दिव्यता का अनुभव प्रदान करने की सामर्थ्य होती है। यह सर्वथा सत्य है कि जब तक पूर्णरूप से सामर्थ्यवान गुरु की कृपा द्वारा शक्तिपात प्राप्त नहीं होता, तब तक व्यक्ति को पूर्ण अन्तर-समाधान मिलना सम्भव नहीं।

२४. गुरु के देने से लेना,
गुरु के लेने से देना,
गुरु का ही होकर रहना,
मुक्तानन्द! ये गुरुभक्ति के लक्षण हैं।

२५. यह सर्वथा निश्चित है कि आत्मा आनन्दपूर्ण है . . . एक बार अन्तर्मुखी होकर उस आनन्द को प्राप्त करने पर, व्यक्ति जब फिर से बहिर्मुखी होता है तो वह सभी में उसी आनन्द को महसूस करता है। जब वह लोगों को इस बोध के साथ देखता है कि वे भी आनन्द से भरे हैं, तो वह समाधि-सुख को प्राप्त करता है।

२६. कितना दिल में खुश हूँ मैं।
कितना हँसता, नाचता, कूदता,
परा-मस्ती में पूर्ण मस्त रहता हूँ।
मुक्तानन्द! जब हृदय में नित्यानन्द प्रकट हुआ
तो ऐसी गति पाई।

२७. तुम्हें अपने मन को "शिवोऽहम्," "मैं शिव हूँ" और "सोऽहम्," "मैं 'वह' हूँ," के भाव में लीन रखना चाहिए। तुम्हारी यह समझ होनी चाहिए, "यह परमात्मा है जो ध्यान कर रहा है। मेरे ध्यान के सभी तत्त्व परमात्मा हैं। मेरा ध्यान स्वयं परमात्मा है।" यह बोध होने पर तुम कहीं भी, कभी भी, अपनी साधना कर सकते हो।

२८. शैवदर्शन के अनुसार, जब साधक कुण्डलिनी शक्ति के बल को प्राप्त कर लेता है तब वह असीमित रूप से विस्तृत होकर सम्पूर्ण विश्व को अपने भीतर आत्मसात् कर लेता है; वह सम्पूर्ण विश्व को अपनी आत्मा में देख पाता है। वह शिव के साथ एकरूप होकर शिव ही बन जाता है।

२९. सिद्ध वह है जो मुक्तियोग के अभ्यास द्वारा परम मुक्ति की स्थिति में पहुँचकर, सदा के लिए उसमें प्रतिष्ठित हो जाता है।

३०. गुरुसेवा, अनमोल है। यह अमूल्य है। तुम अन्य किसी भी चीज़ का मूल्य निर्धारित कर सकते हो, पर तुम गुरुसेवा का मूल्य निर्धारित नहीं कर सकते। गुरुसेवा करने के बाद ही, गुरु को सेवा अर्पित करने के बाद ही, तुम आत्मानुभूति और आत्मप्राप्ति करते हो।

३१. अपनी दृष्टि को बदलो। ध्यान में अधिकाधिक गहरे उतरते हुए वहाँ पहुँचो जहाँ असाधारण परमानन्द की स्थिति तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। जब तुम उस स्थिति तक पहुँचोगे, तब तुम वही बन जाओगे। तुम यह जान जाओगे, "मैं वह हूँ," "सोऽहम्।"

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।